विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

शासनतंत्र में प्रलोभनों से ही भ्रष्टाचार पनपता है

आज हर ओर एक ही शिकायत सुनने को मिलती है कि हमारी और हमारे देश की सभी समस्याओं की जड़ भ्रष्टाचार है जो व्यवस्था में खामी की वजह से है। सभी भ्रष्टाचार को बढ़ाने वाली व्यवस्था को बदलने की बात तो करते हैं किन्तु यह कैसे हो इसका कोई सर्वसम्मत जवाब नहीं मिलता। व्यवस्था तंत्र का तो हर अंग दूसरे के पाले में गेंद सरका देता है। इस जटिल मुद्दे की विवेचना से पहले कुछ जरूरी सामयिक सवाल पूछ लेना उचित होगा। क्या सत्ता भ्रष्ट होती है, या भ्रष्ट लोग सत्ता की ओर खिंचे चले आते हैं? लोग गबन करते हैं, रिश्वत लेते हैं और पुलिस वाले जो बेकसूरों को फंसाते हैं और अपराधियों को भागने में मदद करते हैं क्या वे सब व्यवस्था के परिणाम हैं या वे सिर्फ बुरे लोग हैं? यदि किसी को अचानक सत्ता मिल जाये तो क्या वह अपनी जेब भरने या अपने दुश्मनों से बदला लेने के प्रलोभन से अपने आप को बचा पाने में सक्षम होगा? नेता के बारे में हमारी सबसे बुनियादी धारणा क्या है? जब कोई राजनेता शीर्ष पर पहुंचता है तब उसके दिमाग में क्या चल रहा होता है? इन सवालों के साथ एक सवाल यह भी उठता है कि ऐसा क्यों लगता है कि लोकतंत्र में लोग गलत कारणों से गलत लोगों को सत्ता सौंपने के लिए किसी न किसी तरह आकर्षित हो जाते हैं। क्या व्यवस्था व्यक्तिगत व्यवहार को दिशा देती है? ये वे सवाल हैं जिनसे हम अपनी आज की परिस्थितियों को बेहतर तरीके से समझने का आधार बना सकते हैं। ये वे परिस्थितियां हैं जो लोकतान्त्रिक शासन में निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। निर्णय लेने की प्रक्रिया का निरंतर ऑडिटिंग एक अच्छे और सुचारु लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी है वह क्यों नहीं होती? भारतीय संविधान ने यह काम विधायिका तथा न्यायपालिका के जिम्मे निर्धारित किया है, किन्तु यह व्यवस्था पूरी तरह असफल रही है। सरकार के फैसलों के पीछे की कहानियां कभी साफ–साफ सामने नहीं आ पाती हैं। .

यह साफ दिखता है कि सत्ता राजनेता को ऐसा महसूस कराती है कि जैसे वह सर्वशक्तिमान हो गया है। नेता में ऐसा भाव आ जाना उसके भ्रष्ट आचरण की ओर झुकने का पहला संकेत होता है। तो यूं भी कह सकते हैं कि सत्ता व्यक्ति को भ्रष्टाचार की ओर धकेलती है। शासन में भ्रष्टाचार की परिभाषा भी यही है कि सत्ता में बैठे लोगों द्वारा किया गया बेईमानी का व्यवहार। वास्तव में यह बेईमानी का व्यवहार इतना विस्तृत होता है कि जिसकी कल्पना तक सामान्य जन नहीं कर पाते। कोई भला व्यक्ति सत्ता की राजनीति में आ कर भ्रष्ट कैसे हो जाता है? कुछ लोग मानते हैं कि लोग अपने आप ही अचानक भ्रष्ट हो जाते हैं; दूसरों का मानना है कि लोग सत्ता से प्रभावित होकर शनैः शनैः भ्रष्ट होते हैं।

देश में सत्ता के साथ भ्रष्टाचार का मेल एक खतरनाक व्यवस्था बन गयी है। भ्रष्टाचार में डूबे लोग यह नहीं देख पाते कि क्या सही है और क्या गलत है और क्या अच्छा और क्या बुरा है क्योंकि वे अपने को ताकतवर समझने लगते हैं। सत्ता की ताकत का अर्थ है दूसरों को दबाना, दूसरों को नियंत्रित करना, दूसरों पर शासन करना, दूसरों को अपनी इच्छाओं के अनुसार चलाना। यह ताकत नेता को सुख देती है। इसलिए, जो नेता सत्ता की ताकत पाता है, वह अपने को और अधिक शक्तिशाली बनाना चाहता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि ऐसा करके वह अपनी ताकत के एहसास के आनंद को और बढ़ाना चाहता है। दूसरी तरफ सत्ता साधारण और भले लोगों को नैतिक रूप से भी नीचे गिराती है। हमने यहां तक देखा है कि संत और महात्मा भी अपनी सत्ता के भ्रष्ट प्रभाव से अछूते नहीं रह पाते हैं।

युवा सरकारी अधिकारी जो बदलाव लाने के जज्बे के साथ प्रशासन तंत्र में बड़े उत्साह के साथ आते हैं वे भी सत्ता में रहते हुए भ्रष्ट हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब वे अपने हाथ में वह ताकत पाते हैं जिससे वे प्रतिस्पर्धी बाज़ार में किसी को लाभ पहुंचाने की स्थिति में होते हैं। ऐसे में भले अधिकारी भी बेईमानी की राह पर चल पड़ते हैं। उनका भ्रष्ट आचरण उसी क्षण शुरू हो जाता है जब वे मामूली उपहार स्वीकार करना शुरू करते हैं। धीरे–धीरे वे महंगे उपहार स्वीकार करने लगते हैं। बाद में पक्षपात करने के बदले में रिश्वत की बड़ी बड़ी राशियां स्वीकार करने में भी उनको कोई हिचक नहीं लगती। इसमें वे राजनेताओं को भी अपने जैसा बनाने के जतन कर लेते हैं। राजस्थान में लगभग रोजाना ही रिश्वत लेते पकड़े जाने के मामले जिस प्रकार सामने आ रहे हैं वह प्रशासनिक तंत्र में गहरे पैठी हुई अनैतिकता और बेईमानी को ही दर्शाते हैं। इसमें अब तो राजनेता भी पकड़े जा रहे हैं। यह भी किसी से छुपा नहीं है कि चुनावी राजनीति में शामिल होने की लोगों की बढ़ती आकांक्षा के पीछे अपने और अपनों के लिए धन–संपत्ति बना लेने की कामना ही सर्वोपरि होती है। लोक हित की बातें अब सिर्फ ज़ुबान पर होती है, दिल और दिमाग से नहीं होती।

ईमानदार सामाजिक एवं राजनीतिक नेतृत्व ही लोगों में बेईमान सत्तावादी प्रवृत्तियों के खिलाफ ऐसा जज़्बा पैदा कर सकता है जो प्रलोभनों को नकार सके। आत्म संयमी बनने की कठिन राह पर चलना महात्मा गांधी ने सिखाया था वही भ्रष्ट सत्ता के पिशाच को मारने के लिए सबसे कारगर उपाय हो सकता है।

आधुनिक भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण मोड लाने वाले 'आपातकाल' के बाद सर्वोच्च न्यायालय के अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायधीश जे. सी. शाह ने वर्ष 1978 में इस समस्या को स्पष्ट तौर पर हमारे सामने रखा था तथा इससे उबरने का रास्ता भी सुझाया था। लोगों को याद होगा कि न्यायमूर्ति शाह ने आपातकाल के दौरान शासन द्वारा हुई ज़्यादतियों, कदाचारों और गलत कामों की जांच की थी। उन्होंने अपनी अंतिम रिपोर्ट में कहा था–"... साक्ष्यों से पता चला है, बेईमानी और झूठ तो आपात स्थिति के दौरान एक सरकारी रवैया बन गया था।" तब से अब तक रेगिस्तान में न जाने कितने रेत के धोरे अपना स्थान बदल चुके हैं। किन्तु आज भी बेईमानी के सरकारी रवैये की परिस्थितियां ज्यों की त्यों बनी हुई है। वास्तव में हालात बद से बदतर ही हुए हैं। ऐसा होना रोका जा सकता था यदि उनके निराकरण के लिए जो अपेक्षा न्यायमूर्ति शाह ने अपनी रपट में की थी उस पर अमल होता और सच्चे मन से एक सशक्त लोकतंत्र बनाने का प्रयास होता। परंतु जैसा कि होता रहा है कि न्यायिक आयोगों की रिपोर्टें अलमारियों में पड़ी धूल खाती हैं और उन पर कोई ध्यान ही नहीं देता, शाह आयोग की रिपोर्ट के प्रति खोजना भी आज मुश्किल होगा।

अपनी रिपोर्ट में जस्टिस शाह ने कहा था:– "अगर हमें अपने देश के प्रशासन तंत्र को अपने बच्चों के लिए सुरक्षित बनाना है तो प्रशासनिक सेवाओं को चाहिए कि वे ईमानदार व कार्यकुशल प्रशासन के आधारभूत आदर्शों के लिए दृढ़ता से काम करें और अपने को कसौटी पर खरा उतार कर दिखाएं। केवल यही वह तरीका है जिसके जरिये प्रशासन के प्रति जनता का खोया विश्वास फिर से पनप सकता है। अगर हमें भावी पीढ़ियों के लिए एक लोकतान्त्रिक उत्तरदायी परंपरा छोड़नी है तो हमें देश की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक योजनाओं में सत्य को उसका उचित स्थान फिर से देना होगा। इसमें असंभव कुछ भी नहीं। "न्यायमूर्ति शाह ने जब ये पंक्तिया आपातकाल की ज़्यादतियों पर अपनी रिपोर्ट में लिखी तब जैसी परिस्थितियां थी आज उससे भी भयानक परिस्थितियां हमारे सामने हैं। मगर जब ऊपर से नीचे तक झूठ और फरेब से ही काम सधते हों तब 'सत्य को उसका उचित स्थान' देने की बात करना भी बेमानी लगता है। आज तो लगता है हालात एकदम हाथ से ही निकल गए हैं क्योंकि प्रशासनिक सेवाओं के लोग लोक सरोकारों की तिलांजलि देते हुए जिस प्रकार सत्ता के शीर्ष पर बैठे व्यक्ति के प्रति वफादारी अब निभा रहे हैं वह अभूतपूर्व है। अब ऊपर से दबाव की जगह अफसरों की अपनी महत्वाकांक्षाएं भी उनके व्यवहार तय करने लगी हैं। जिस बड़ी संख्या में सेवानिवृत्ति के बाद प्रशासनिक तथा पुलिस अधिकारियों को सरकारी और अर्धसरकारी संस्थाओं में उनकी नियुक्तियां होती हैं उसके बुरे नतीजे सामने आने पर भी किसी को तकलीफ नहीं होती। अफसरों की चुनावी राजनीति की महत्वाकांक्षाएं भी सिर चढ़ी हुई हैं।

कोई भी निर्बाध सत्ता एक सच्चे लोकतंत्र के लिए अनुकूल नहीं होती। उस पर सतत अंकुश बना रहना जरूरी है वरना उसके अधिनायकवाद में बदल जाने में समय नहीं लगता। भारतीय संविधान ने सत्ता पर नियंत्रण और संतुलन का प्रभावी इंतज़ाम किया है फिर भी सतर्क नागरिक ही सत्ता की ताकत के दुरुपयोग के खिलाफ एकमात्र सुरक्षा के उपाय हो सकते हैं। ताकतवर नेताओं, नौकरशाहों और अन्य के संदिग्ध कार्यों को बेनकाब करने में मीडिया के लोग अपनी उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं बशर्ते कि वह खुद उनसे गठबंधन न कर बैठे। एक मजबूत न्यायपालिका भी सत्ता के दुरूपयोग पर लगाम लगा सकती है जिसकी संविधान ने व्यवस्था कर रखी है। किन्तु ये सारी व्यवस्थाएं धरी रह जाती है जब लालच सिर पर चढ़ जाता है। सतर्क नागरिक अपने आप तैयार नहीं हो सकते। उसके लिए भी शिक्षण की जरूरत होती है। किन्तु हमारी शिक्षा प्रणाली इस काम के लिए तैयार नहीं है। ईमानदार सामाजिक एवं राजनीतिक नेतृत्व ही लोगों में बेईमान सत्तावादी प्रवृत्तियों के खिलाफ ऐसा जज़्बा पैदा कर सकता है जो प्रलोभनों को नकार सके। आत्म संयमी बनने की कठिन राह पर चलना महात्मा गांधी ने सिखाया था वही भ्रष्ट सत्ता के पिशाच को मारने के लिए सबसे कारगर उपाय हो सकता है।

–अतिथि संपादक
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

राजस्थानी काव्य में गांधीजी :
"दुनिया गांधी न समझैली, आ धरा सरग ज्यूं बणजासी"

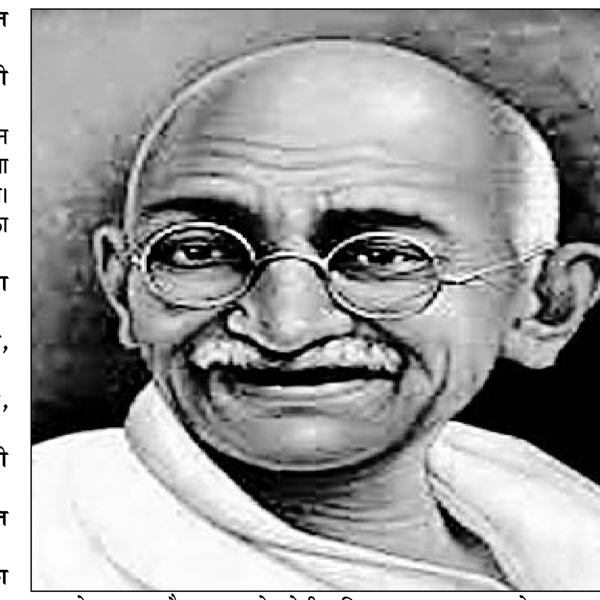

यद्यपि अजमेर और ब्यावर के अतिरिक्त राजस्थान के किसी भी भाग में महात्मा गांधी (1869–1948 ई.) का पदार्पण नहीं हुआ किन्तु देश के अन्य भागों की भांति तत्कालीन राजपूताने की देशी रियासतों का जन जीवन भी उनके क्रियाकलापों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। यहां के निवासियों पर समय–समय पर शोषण व अन्याय के विरूद्ध किये गये आंदोलनों में गांधीजी का नैतिक समर्थन और मार्ग दर्शन बराबर मिलता रहा। अनेक राजस्थानी साहित्यकारों ने भी अपने काव्य के माध्यम से गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की है।

राजस्थान के वीरों ने तोप, तलवारों और बंदूकों से शत्रुओं पर विजय प्राप्त की थी किन्तु गांधी एक अहिंसा हथियार से ही महान् योद्धा सिद्ध हुए। श्री सांवल दान आसिया के शब्दों में:–

"बिन तोपां, बंदूकां, बिन तरवारा, बिन तीर।
एक अहिंसा हूत हूं, बणियों गांधी वीर।।"

घर में दीवार पर देवी–देवताओं के साथ गांधीजी का भी चित्र लगा हुआ है। बालक अपनी मां से पूछता है क्या यह भी कोई देवता है? बीकानेर के स्व. श्री गिरधारी सिंह पड़िहार के शब्दों में मां बच्चे को समझाती है:–

ओ बीज नाख रमम्यो बाबो, धन बरसैला ऊंचो आसी,
दुनियां गांधी न समझेली, आ धरा सरग ज्यू बणजासी।
तू भोलो टाबरियो छोटो, जद मोटो होसी भाव भर्‌यो।
समझैलो गांधी बाबा न, ओ कियां जियो ओ कियां मर्‌यो।।

अर्थात् यह उस गांधी बाबा का चित्र है जो बीज (आजादी) की बुवाई कर अंतर्ध्यान हो गया। ज्यों–ज्यों इस बीज का पौधा प्रस्फुटित होकर बड़ा होगा और फल देगा तब धन–धान्य की वर्षा होगी। जब यह विश्व गांधी को समझने लगेगा तब यह पृथ्वी स्वर्ग बन जायेगी। मेरे

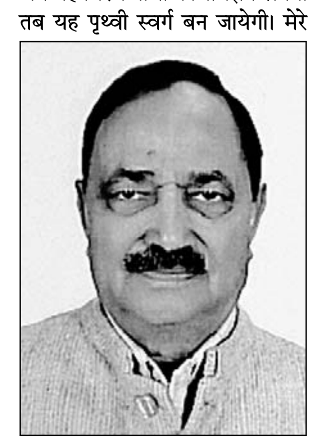

बच्चे। अभी तूं छोटा है, जब बड़ा हो जायेगा तब तेरे समझ में आयेगा कि उसने किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत किया और किस प्रकार से स्वर्ग को सिधान गया।

श्री लल्लू प्रसाद 'सुमन' ने गांधीजी की ज्ञानी और दानी की परिभाषा व्यक्त करते हुए लिखा है–

"या है गांधी जी की बाणी रे,
ऊंच नीच का बंधन तोड़े सोही ज्ञानी रे।
हरिजणां न गलै लगावे, बोले मीठा बोल,
मिनख मिनख न भाई मानें, मन की घुंडी खोल,
सोही सांचो दानी रे, या है गांधी जी की बाणी रे।।"

जहां कही भी बापू जाते, अपार जन समूह उनका हृदय से स्वागत करता और वातावरण सुखमय हो जाता। कविराज मेघराज मुकुल के काव्य का रसास्वादन कीजिये –

"तारा झुक झुक झांरवण लाग्या, चांदडलो मुसकायो।
पवन झकोरो बांध घुंधरू, ठुम्मक ठुम्मक आयो।।
बादलियो बूंदा कँ सुरमें, रिमझिम गीत सुनायो।
आज देश री धरती जागी, गांधी बाबो आयो।।
आजादी री लड़ी लड़ाई सात समंदर हाल्या।
गोरा बिस्तर बांध बापडा, पाछा घर न चाल्या"।।

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध कवि बुद्धि प्रकाश पारीक ने लिखा है कि बापू सजग और सुदृढ़ थे तथा सत्य में सबसे आगे थे –

"ज्यूं काली कॉमल पर, कोई रंग न लागे,
ज्यूं सामंत मरजाय, न रण सूं ओठो भागे।
ज्यू जग के सोयां, रात भर जोगी जागे,
त्यूं बापू छा सजग, सुदृढ़ सत मं सब आगे"।।

गांधीजी के साथ माता कस्तूरबा के त्याग का महत्व भी कम नहीं है। वह पतिव्रत रूपी पतवार लिए हुए बापू की छाया के समान सदैव अपना योग देती रही। श्रीमती मधुमति प्रभूणे ने राष्ट्रमाता 'बा' को श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुए लिखा है–

"करड़ी री कस्तूरबा साजन रो सत पेख।
छाया जिम छाई रही, गांधी गौरव मेख।।
रामलार सीता रही, रुक्मण किरसन लार।
बापू लारे 'बा' रही, पतिव्रत री पतवार।।"

कविवार मोहर सिंह राठौड़ ने लिखा है कि बापू के निधन के बाद उनका गुणगान तो बहुत हुआ है किन्तु उनके गुणों का अनुसरण नहीं किया गया। इस प्रकार के आचरण से कैसे निर्वाह होगा? गांधीवाद की आड़ लेकर जो जानबूझकर अत्याचार करते हैं। उन्हें गांधीजी का नाम लेने का अधिकार नहीं है।

"गांधी गुण गाया धणा, पण धार्‌या न एक।
सोचो हिरदे हाथ रख, कींकर रहसी टेक।।
गांधीवाद री ओट से, जुलम करे जानेह।
नाम लेणरो हक नहीं, गांधी रो बानेह।।"

– देवी सिंह नरूका,
(वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार)

ममता से मुक्ति या ममता में मुक्ति

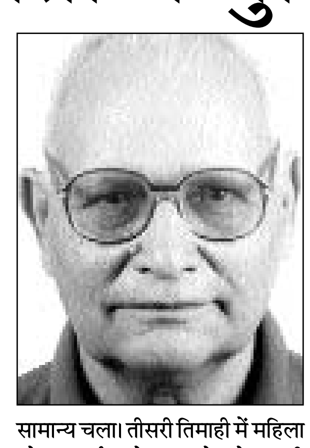

शारीरिक स्वायत्तता (ऑटोनोमी) की रक्षा करना, अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक है। इसकी सुरक्षा के लिए स्वतः विकसित रक्षा संस्थान जीन (आनुवांशिक गुण सूत्र) आधारित होता है। यह रक्षा संस्थान स्वायत्तता के लिए शरीर की जीन संरचना को पहचानता है, उसे आत्मसात करता है। किन्हीं दो व्यक्तियों की जीन संरचना एक जैसी नहीं होती, सिवा युनिओव्यूलर (एक ही ओवम – स्त्री बीज – से विकसित) जुड़वां बच्चों के। शरीर का रक्षा संस्थान इसे पहचानता है और इसकी रक्षा करने को प्रतिबद्ध, अपना प्रतिरक्षा संस्थान विकसित करता है। स्वयं की जीन संरचना से इतर अन्य कोई भी जीन संरचना के तत्व को प्रतिरक्षा संस्थान शरीर में प्रवेश नहीं करने देता। और अगर किसी तरह प्रवेश कर भी जाए तो उन्हें नष्ट कर बाहर फेंक देता है। इस प्रतिरक्षा प्रक्रिया को इम्यूनिटी कहते हैं।

अगर किसी के शरीर में उसके जीन से इतर जीन का प्रवेश करवाना हो तो पहले उसके प्रतिरक्षा संस्थान को मनाना होता है, उसका शमन करना होता है, उसे प्रभावित कर अपने पक्ष में करना होता है। यह प्रकृति का शाश्वत नियम है। भ्रूण के आधे गुणसूत्र पिता से आते हैं। ये विषम गुणसूत्र माता के रक्षा संस्थान को सहज स्वीकार नहीं होते। आवश्यक है कि भ्रूण के आगमन से पहले माता के रक्षा संस्थान को इनके प्रति जागरूक, संवेदनशील और अनुकूल बनाया जाय।

प्रजनन में भ्रूण के पितृ जीन के प्रति मातृ रक्षा संस्थान की संवेदनशीलता इसी के अनुरूप सहज समागम से विकसित होती है, सहज सहवास और समागम से। महिला गर्भवती हुई। गर्भ की पहली और दूसरी तिमाही तक सब सामान्य चला। तीसरी तिमाही में महिला को सर दर्द रहने लगा। पेट के ऊपरी भाग में तेज दर्द भी। दिखाया। रक्तचाप बढ़ा हुआ था। मूत्र परीक्षण पर प्रोटीन्यूरिया पाया गया। टखने, पानी जमा होने से फूल गये थे। इसे प्री–एक्लेम्पसिया कहते हैं। यह 10 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं में होता है। इसमें महिला का प्रतिरक्षा संस्थान गर्भस्थ शिशु के जीन्स के प्रति सर्वथा संवेदनशील नहीं हो पाया है। फलस्वरूप, मां का रक्षा संस्थान शिशु के विकास में बाधा डालता है, मस्तिष्क विकास को प्रभावित करता है, समय पूर्व प्रसव को प्रेरित करता है। उधर शिशु के विषम जीन तत्वों की प्रतिक्रिया में मां की रक्तवाहनियां क्षतिग्रस्त होती हैं, जिससे उसके गुर्दे और लिवर क्षतिग्रस्त होते हैं। अधिकांश महिलाओं में प्री–एक्लेम्पसिया के रक्तचाप पर काबू कर सफल प्रसव संभव होता है। लेकिन कुछ में मां का रक्षा संस्थान बेकाबू और उग्र हो जाता है। लिवर की गंभीर क्षति से घातक स्थिति बन जाती है या प्री–एक्लेम्पसिया पूर्ण एक्लेम्पसिया का रूप ले लेता है, जिसमें घातक तांण आते है। और इन सब का प्रमुख कारण होता है मां का असहिष्णु रक्षा संस्थान।

अनुसंधान से उजागर हुआ है कि वीर्य में 93 ऐसे तत्व चिन्हित हुए हैं जो मां के रक्षा संस्थान को पितृ जीन्स के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। योनि से अवशोषित हो कर ये तत्व इम्यून मोड्यूलेशन का कार्य करते हैं। यह एक सतत प्रक्रिया है। यह पाया गया है कि एक ही पुरुष से दीर्घ कालिक समागम करने वाली महिलाओं में प्री–एक्लेम्पसिया बहुत कम में होता हैं। यह भी पाया गया कि नियमित निरोध (कंडोम) युक्त समागम करने वाली महिलाओं में यह अधिक होता है। अनुसंधान से पाया गया है कि बच्चे के विषम जीन्स के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने में बिना कंडोम के सामान्य समागम की महत्वपूर्ण भूमिका है। जैविक प्रयोग पर इसकी पुष्टि हुई है। जिन महिलाओं में बार बार स्वतः गर्भपात या प्री–एक्लेम्पसिया होता है उन्हे 'टी जी एफ–बीटा' नामक वीर्य में चिन्हित इम्यून मोड्यूलेटर फेक्टर देने से लाभ होता है। जिन पुरुषों के वीर्य में इस फेक्टर की कमी होती है उनसे गर्भ धारण करने वाली महिलाओं में गर्भ क्षरण या प्री–एक्लेम्पसिया अधिक होता है।

स्त्रीत्व की चरमावस्था, चरमोत्कर्ष मातृत्व होता है। यह प्रकृति नियत है; सनातन, सार्वभौम, शाश्वत। मातृत्व में ही स्त्री की मुक्ति है। और बिना स्व को त्यागे मुक्ति नहीं मिलती। आज जनसंख्या नियंत्रण के लिये चल रहे व्यापक मातृत्व से मुक्ति अभियान ने असहज स्थिति उत्पन्न कर दी है। प्रकृति नियत मातृत्व में मुक्ति और समाज नियत मातृत्व से मुक्ति के बीच समन्वय ही आज की स्त्री का जीवन संकट है, त्रासदी भी।

– डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

जर्जर भवन में पढ़ने को मजबूर बच्चे, कभी भी हो सकती है बड़ी अनहोनी

क्षतिग्रस्त विद्यालय भवन एवं बाहर बेठे शिक्षक एवं अध्ययनरत विद्यार्थी।

चाकसू, (निसं)। सरकारी बजट में भी शिक्षा के नाम पर काफी खर्च करने की बात कही जाती है लेकिन इन सबके बावजूद राजस्थान में शिक्षा का स्तर सुधरने का नाम नहीं ले रहा है। जयपुर जिले कि चाकसू उपखंड के ग्राम बड़ली का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भवन जर्जर हालत में है, जिसके कारण वहां के बच्चे भय के माहौल में पढ़ ने को मजबूर हैं लेकिन प्रशासन को इसकी परवाह नहीं है।

ये स्कूल पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुका है। जर्जर हो चुके स्कूल की बिल्डिंग में कभी भी बड़ी अनहोनी हो सकती है। विद्यालय भवन की हालत को देखकर प्रधानाचार्य को भी सर्दी के मौसम में भी बच्चों को खुले में बैठाकर पढ़ाने के निर्देश अध्यापकों को देना पड़ रहा है। विद्यालय के 178 बच्चे किस तरह पढ़ ते होंगे, इसका अंदाज इस भवन की हालत देखकर लगाया जा सकता है। ग्रामीणों ने बताया कि इसकी छत और फर्श की दीवारें पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी हैं। बच्चे जब इस क्षतिग्रस्त भवन के कमरों में बैठकर अध्ययन करते हैं तो घर में बैठे उनके माता–पिता को उनकी चिंता रहती है।

विद्यालय पीटीआई रामजीवन ने बताया कि शिक्षा के मंदिर की हालत बेहद खराब हो गई है कक्षा कक्षों में इस हालत में शिक्षण कार्य करवाना संभव नहीं है इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से मजबूरन बच्चों को खुले में बिठाकर पढ़ाया जा रहा है।

शिकायत करने पर भी प्रशासन कर रहा नजरअंदाज : लगभग 60 – 70 साल पुरानी यह बिल्डिंग आज अपना वजूद खो रही है। इस बारे में जब स्कूल के प्रधानाचार्य रामकिशोर बैरवा से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इसकी लिखित शिकायत कई बार ब्लॉक शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय में दी जा चुकी है। लेकिन अब तक इस पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। लिखित शिकायत में बिल्डिंग को ध्वस्त करने की मांग की गई है लेकिन अब तक बिल्डिंग इसी जर्जर हालात में खड़ी है। वहीं सीबीईओ हनुमान सहाय मीणा ने बताया कि जर्जर स्कूल के भवन के बारे में जानकारी मिली है। फिलहाल उसकी जांच के लिए बीओ को निर्देशित किया है एवं रिपोर्ट पर भवन की हालत को देखते हुए मरम्मत या नए भवन के निर्माण की मांग का प्रस्ताव बनाकर स्वीकृति के लिए विभाग को भेजा जाएगा।

विद्यापीठ का देश में 39वां एवं राजस्थान में द्वितीय स्थान

उदयपुर,(कासं)। द इंडियन इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क. आईआईआरएफ की ओर से 2021 में देश के सरकारी व पब्लिक विश्वविद्यालयों की इम्पैक्ट रैंकिंग में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि को देश में 39वां स्थान राजस्थान में द्वितीय व उदयपुर में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। आईआईआरएफ की ओर से जारी इस वर्ष की इम्पैक्ट रैंकिंग में 1000० से अधिक संस्थानों को विभिन्न श्रेणियों में रैंक दिया गया। कुलपति प्रो. कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि संस्थापक जनुभाई द्वारा 1937 में स्थापित इस संस्था ने कई नये कीर्तिमान स्थापित किया है। हम सभी का सपना है कि इस संस्था को विश्व पटल पर अपनी एक अलग पहचान दिलाने की है जिसके लिए सभी कार्यकर्ता इस ओर अग्रसर है। वंचित व आदिवासी वर्ग को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए स्थापित इस संस्था ने वंचित वर्ग को सुलभ चिकित्सा सुविधा मिले इस ओर भी अपने प्रयास तेज कर दिए है और अतिशीघ्र डबोक परिसर में 13 करोड़ की लागत से बने 120 बेड वाले हॉस्पिटल का आगामी दिनों में शुभारंभ करने जा रही है जिससे डबोक क्षेत्र के आसपास के आमजन को इसका लाभ मिलेगा। इसमें केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा जारी योजनाओं का लाभ आमजन को मिलेगा। यूनी रैंक द्वारा कराये गये सर्वे में भी विद्यापीठ ने प्रदेश में सातवाँ व उदयपुर में पहला स्थान प्राप्त किया है। संस्था को नेक ने भी ए ग्रेड से नवाजा है। यह सब समर्पित व निष्ठावान कार्यकर्ताओं की ही बदौलत हो पाया है। रजिस्ट्रार डॉण् हेमशंकर दाधीच ने कहा कि विद्यापीठ की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान के श्रमजीवी और वंचित वर्ग को समुचित शिक्षा प्रदान करना है। कार्य के नोडल अधिकारी डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी ने बताया कि उक्त रैंकिंग मुख्यतः तीन विशेष मापदंडों पर आधारित है जिसमें विवि के कार्यों का समाज पर प्रभावए विभिन्न हितधारकों के कल्याण तथा उच्च शिक्षा के पैमाने पर संयुक्त राष्ट्र सतत विकास के 17 वें लक्ष्य पर उतरना शामिल है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 2 दिसम्बर, 2021

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2078, स्वाती नक्षत्र सायं 4:27 तक, स्वाती नक्षत्र सायं 4:59 तक, गर करण दिन 10:01 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–वृश्चिक, चन्द्रमा–तुला, मंगल–तुला, बुध–वृश्चिक, गुरू–कुम्भ, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

आज भद्रा रात्रि 3:27 से शुक्रवार प्रातः 6:41तक है। आज प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:21 तक, चर 10:58 से 12:16 तक, लाभ–अमृत 12:16 से 2:52 तक, शुभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:03, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। महत्वपूर्ण कार्य से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। मानसिक तनाव दूर होगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना बन सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश हो सकते हैं।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
धार्मिक कार्य पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्य के लिए भागदौड़ रहेगी।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।